पशुपालन को बनाया रोजगार का साधन

पशुपालक का नाम	:	श्री गजानन्द भारती
पिता का नाम	:	श्री कैलाश भारती
उम्र	:	35 वर्ष
पता	:	मोर, टोडारायसिंह (टोंक)
शिक्षा	:	10वीं पास
मोबाईल नं.	:	9680403440

वर्तमान समय में पशुपालकों के लिए केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा विभिन्न प्रकार के ऋण उपलब्ध करवाये जा रहे हैं जिससे पशुपालक भाई अपना व्यवसाय प्रारम्भ कर सकते हैं। ऐसे ही एक पशुपालक गजानन्द भारती निवासी मोर, तहसील टोडारायसिंह, जिला टोंक के हैं, जिन्होंने वर्ष 2018 मे नाबार्ड से ऋण लेकर 3 उन्नत नस्ल की भैंसों से अपने पशुपालन व्यवसाय की शुरुआत की। पशु विज्ञान केंद्र, टोंक द्वारा आयोजित प्रशिक्षण शिविरों मे भाग लेकर इन्होंने अपने पशुओं की संख्या में इजाफा करके कई नवाचारों को अपनाया तथा वैज्ञानिक तौर–तरीकों से उन्नत पशुपालन करने हेतु प्रेरणा ली। पशु विज्ञान केंद्र, टोंक के वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार वैज्ञानिक तौर–तरीकों को अपना रहे हैं। आज इनके पास 10 भैंस एवं 3 गाय उन्नत नस्ल के उपलब्ध हैं तथा रोजाना 50 लीटर दूध डेयरी में उपलब्ध करवाते हैं, जिससे प्रतिदिन 3000 रूपये आय प्राप्त हो रही हैं।

नदीम ने बनाया बकरी पालन को आय का मुख्य स्रोत

पशुपालन का नाम	:	श्री नदीम मेव
पिता का नाम	:	श्री अनीस खान
उम्र	:	29 वर्ष
पता	:	टोंक
शिक्षा	:	जीएनम, बीए
मोबाईल नं.	:	9269006035

टोंक निवासी नदीम ने जमीन के अभाव में पशुपालन को एक व्यवसाय के रूप में चुना तथा वे पिछले 6–7 सालों से पशुपालन कर रहे हैं। इन्होंने बकरी पालन को अपना मुख्य व्यवसाय बनाया तथा वर्तमान में इनके पास 3 मुर्रा नस्ल की भैंसें, 6 गिर नस्ल की गायें, 1 बैल, 1 घोड़ा, 2 घोड़ी तथा 70 बकरियां हैं। पशु विज्ञान केंद्र, टोंक के वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार वैज्ञानिक तरीके से बकरियों की नस्ल सुधार, आवास व्यवस्था, स्वास्थ्य व पोषण का प्रबंधन करके अपने पशुपालन को उन्नत बनाया। केंद्र के वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार बकरियों का टीकाकरण, खनिज मिश्रण तथा पशु आहार की लागत को कम करने व बकरियों को उच्च प्रोटीन युक्त हरे चारे के अजोला खिला रहे हैं। नदीम का कहना है कि जब से वैज्ञानिक तौर–तरीकों से बकरी पालन प्रारंभ किया है उन्हें दुगुना मुनाफा मिलने लगा है। वे अब लगभग 35 से 40 हजार प्रति माह कमा लेते है। बकरी पालन एक चलता–फिरता एटीएम है जिससे पशुपालक कभी भी रकम जुटाकर अपनी आवश्यकताओं को पूरी कर सकता है। नदीम पशुपालकों तथा युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

भैंस पालन के साथ गिर नस्ल संवर्द्धन का कार्य कर रहा है शिवराज

पशुपालक का नाम	:	श्री शिवराज सैनी
पिता का नाम	:	श्री बच्छराज सैनी
उम्र	:	38 वर्ष
पता	:	सूईवालों की ढाणी, मालपुरा (टोंक)
शिक्षा	:	बीए
मोबाईल नं.	:	9828510430

शिवराज सैनी निवासी सूईवालों की ढाणी, मालपुरा टोंक ने कृषि आधारित जमीन की कमी होने के कारण पशुपालन को एक व्यवसाय के रूप में चुना तथा पिछले 10–12 सालों से पशुपालन कर रहे हैं। इन्होंने पशुपालन की शुरूआत 5 उन्नत नस्ल की भैंसों से की। वर्तमान मे इनके पास 20 मुर्रा नस्ल की भैंसें, 05 गिर नस्ल की गायें तथा 06 बछड़ियां उपलब्ध हैं। पशु विज्ञान केंद्र, टोंक के वैज्ञानिकों के सम्पर्क में आने के पश्चात पशुपालन में नवाचारों को अपनाने तथा वैज्ञानिक तौर–तरीकों से पशुपालन के लिए प्रेरित हुए तत्पश्चात वैज्ञानिक तरीके से नस्ल सुधार, पशु आवास व्यवस्था, स्वास्थ्य व पोषण का प्रबंधन करके अपने पशुपालन को उन्नत बनाया। केंद्र के वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार पशु आहार की लागत को कम करने तथा पशुओं को उच्च गुणवतायुक्त हरे चारे की उपलब्धता के लिए अपने फार्म पर अजोला यूनिट की स्थापना करने की योजना बना रहे है। यह नस्ल सुधार हेतु गुजरात से गिर नस्ल का नर लेकर आये है तथा नस्ल सुधार का महत्वपूर्ण कार्य कर रहे है जिसका लाभ अन्य पशुपालकों को भी मिल रहा है। यह महीनें का शुद्ध लाभ 50000 से 60000 रूपये पशुपालन से कमा रहे हैं। शिवराज सैनी, पशुपालकों तथा युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

नवाचारों को अपनाकर पशुपालन को बनाया उन्नत

पशुपालक का नाम	:	श्री हरिराम चौधरी
पिता का नाम	:	श्री रामपाल जाट
उम्र	:	23 वर्ष
पता	:	डारडा हिन्द (टोंक)
शिक्षा	:	बीए
मोबाईल नं.	:	7665672737

हरिराम चौधरी निवासी टोंक पिछले 7–8 साल से पशुपालन कर रहे हैं। वर्तमान मे इनके पास कुल 28 पशु हैं जिनमे 7 मुर्रा नस्ल की भैंसें, 1 एच एफ, 1 गिर नस्ल की गाय व बैल तथा 4 बछड़ियां उपलब्ध हैं। हरिराम ने नस्ल सुधार हेतु कृत्रिम गर्भाधान का प्रशिक्षण लिया, जिससे खुद के तथा अन्य पशुपालकों के पशुओं की नस्ल सुधार मे बहुत कामयाबी हासिल हुई। हरिराम 30000 रूपये प्रतिमाह का शुद्ध लाभ दूध बेचकर कमा रहे हैं। इनका कहना है की यह प्रतिवर्ष औसत 50 हजार रूपये का गोबर खाद बेच देते हैं। यह पशु विज्ञान केंद्र, टोंक के वैज्ञानिकों से पशुओं के लिए संतुलित आहार, कर्मीहरण, टीकाकरण की सलाह लेते रहते हैं। केंद्र के वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार यह पशुओं को हरे चारे के विकल्प के रूप में नेपियर हाइब्रिड घास खिला रहे हैं जो की दुग्ध उत्पादन बढ़ोतरी में वरदान साबित हुआ। इनका मुख्य उद्देश्य पशुओं की नस्ल सुधार कर पशुपालन से ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाना है। इनकी यह अनूठी पहल युवा पीढ़ी तथा अन्य पशुपालकों के लिए प्रेरणा स्रोत है।

नवाचारों को अपनाकर डेयरी को विकसित किया

पशुपालक का नाम	:	श्री बालमुकुन्द सिह
पिता का नाम	:	श्री मानसिंह
उम्र	:	53 वर्ष
पता	:	बगड़ी, पीपलू (टोंक)
शिक्षा	:	12वीं पास
मोबाईल नं.	:	8058924034

टोंक निवासी बालमुकुंद काफी वर्षों से पशुपालन व कृषि का कार्य कर रहे हैं। इन्होंने पशुपालन का कार्य 3 भैंस से प्रारंभ किया था। पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक के वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार पशुपालन को मुख्य व्यवसाय मानकर पशुओं की संख्या में वृद्धि की व वर्तमान में इनके पास 35 भैंस, 17 बछड़ी, 10 गाय तथा 20 बकरी है तथा पशुओं की संख्या ओर बढ़ाना चाहते हैं। यह भैंस की मुर्रा व गाय की गिर नस्ल का वैज्ञानिक तरीके से पालन कर रहे हैं। यह अपनी जमीन का उपयोग पूर्ण रूप से पशुओं के हरे चारे के रूप में कर रहे हैं। बालमुकुंद औसत 20 लाख का दूध प्रतिवर्ष बेच देते हैं। पशुओं से प्राप्त गोबर का उपयोग जैविक खाद के रूप में कर रहे हैं। बालमुकुंद पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक की सलाह अनुसार पशुओं के लिए संतुलित आहार, टीकाकरण, कर्मी हरण, खनिज लवण तथा नमक आदि का उपयोग कर रहे हैं तथा केन्द्र के वैज्ञानिकों से पशुओं की बीमारियों के बारे में विचार विमर्श करते रहते हैं। यह अपने व्यवसाय से बहुत खुश हैं तथा युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं।